International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 9 Sep. 2022, pp: 1161-1163 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

'कगार की आग' उपन्यासपर आधारित दलित स्त्री गोमतीपरहुए अत्याचार और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दलित स्त्री

आकांक्षा टम्टा
शोध छात्रा
हिन्दी विभाग
एम० बी० जी० पी० जी०
कालेज, हल्द्वानी (नैनीताल)

Date of Submission: 15-09-2022 Date of Acceptance: 24-09-2022

भारतीय समाज में दलित और निम्न वर्ग की स्त्रियों की सबसे बड़ी त्रासदी उनका स्त्री होना है। सामाजिक व्यवस्था में वह सबसे नीचे पायदान में होने के कारण हमेशा सांमती मानसिकता वाले पुरुषों के आतंक के कारण दोहरी मानसिकता में जीने को विवश होती हैं। वह केवल भोग विलास की वस्तु रही हैं। पत्नी होने के बावजूद वह किसी दासी या रखैल से कम न थी, उनका व्यवहार चलना, फिरना सब कुछ पुरुषों द्वारा नियंत्रित होता था। ''इस संदर्भ में रजतरानी 'मीनू' कहती है कि, ''सिमोन दल बोउवार'' के मत से थोड़ा हटकर यदि भारतीय परिवेश में देखें तो दलित स्त्री मात्र स्त्री होने की त्रासदी नहीं झेलती, बल्कि उसका दलित जाति से होने के कारण वह लिंग भेद और जाति भेद सहते हुए दोहरे–तिहरे आक्रमण झेलती है। एक पुरूष प्रधान समाज होने के कारण वह अपने ही समाज के पुरूषों की दृष्टि से भी दूसरे दर्जे की प्राणी है जो उसके अनुसार कम बुद्धि की है। दूसरी ओर गैर दलित समाज उसे दो तरह से कमजोर पाता है, एक तो वह स्त्री है, दूसरे वह दलित जाति से होती है।''[1]

दलित स्त्री का जीवन संघर्षो से घिरा हुआ है। वह अपनी बात न अपने घर के भीतर कह पाती है और न ही समाज के सम्मुख। विवाह करना, बच्चा पैदा करना तथा पुरुष की कुंठा का शिकार होना उसकी नियति बन गई है। इसका मुख्य कारण शिक्षा का अभाव, आर्थिक स्थिति तथा जातिगत विभेद है। अन्याय, अत्याचार, शोषण, गरीबी वह बिना किसी शिकायत के सह लेती है। उत्तराखण्ड में भी दलित वर्ग की महिलाओं द्वारा मेहनत, मजदूरी, खेतीबाड़ी आदि काम किया जाता है। पहाड़ में अधिकतर कार्य जैसे गाय–भैसों का काम, जंगल जाना, घास काटना, खेतों में रोपाई निराई–गुड़ाई आदि लगभग सभी कार्य स्त्रियाँ ही करती है। उन्हें सवर्ण वर्ग द्वारा उचित मजदूरी ना देना, जाति के नाम से अपशब्द कहना, सवर्ण पुरुषों द्वारा उनका शारीरिक शोषण करना पूर्व से ही होता रहा है, और समाज में आज भी कई स्थानों पर ऐसी घटनाएँ देखने को मिल जाती हैं। वर्तमान समय में दलित समाज की स्त्रियाँ पढ़ लिखकर अच्छे पदों पर भी कार्यरत है। लेकिन फिर भी महिलाओं की स्थिति में अधिक सुधार नहीं आया है। गाँवों मे दलित स्त्रियों की स्थिति गम्भीर है, क्योंकि जातिवाद, छूआछूत आज भी व्याप्त है। इन सभी समस्याओं और संवेदनाओं को देखकर उत्तराखण्ड के कुछ साहित्यकार हिमांशु जोशी ने अपने उपन्यासों में दलित वर्ग की पीड़ा व दलित स्त्रियों के विषय में लिखकर समाज का ध्यान आकृष्ट किया है। दलित स्त्री गोमती के जीवन संघर्ष के माध्यम से जोशी जी ने दलित स्त्री की गहन पीड़ा, अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरूद्ध उसके संघर्ष और प्रतिशोध की अभिव्यक्ति कगार की आग उपन्यास में की है।

महत्त्वपूर्ण शब्द–गोमती, पिरमा, दलित स्त्री, बलात्कार, सुन्दर और रूपवान स्त्री, सवर्ण पुरुष, जातिगत भेदभाव, शोषण, लाला तिरपन सिंह।

स्त्रियों की दयनीय स्थिति, शोषण, बलात्कार और अत्याचारों का चित्रण हिमांशु जोशी के उपन्यास 'कगार की आग' में हुआ है। उपन्यास की नायिका गोमती को निम्न दलित वर्ग की महिला के रूप में दर्शाया गया है। वह अत्यन्त सुन्दर और रूपवान स्त्री है जिस पर समाज के हर पुरूष की नजर है और वह उसका शारीरिक शोषण करना चाहता है। गोमती अपने ही घर में सुरक्षित नहीं है उसके ककिया ससुर की नियत उसके प्रति अच्छी नहीं थी । गोमती का पति पिरमा सीधा–साधा व्यक्ति है, जिसका फायदा उठाकर उसका चाचा कलिया उसे दिन भर गाय–बैलों को चराने को भेज देता और रात को खेतों की रखवाली करने के लिए भेजता है। रात के अन्धेरे में वह गोमती के साथ अवैध सम्बन्ध बनाना चाहता है। वह रोज गोमती की झोंपड़ी में झाँकने का प्रयास करता है। लेकिन गोमती उसे हर बार दुत्कार देती है। एक रात जब वह अन्दर ही घुस जाता है, तो गोमती अपने बचाव के लिए हँसिया अन्धेरे में फेंकती है जिससे ककिया ससुर के माथे पर चोट लग जाती है। सुबह जब लोग चोट लगने का कारण पूछते है तो वह कहता है रात के अन्धेरे में आँख न दिखी पाँव फिसल गया। गोमती की हर रात दहशत में गुजरती थी। उसने अपने पति पिरमा से भी कहा कि ''तुम्हारे कका की नजर अच्छी नहीं है। इनके मन में पाप उपज गया है। बड़ी गन्दी निगाह से देखते है''[2] उसका पति उसकी बातों पर विश्वास नहीं करता है और कहता है इतने बूढ़े पर शक करती है। गोमती स्वंय को अपने ही घर में सुरक्षित नहीं समझती थी, परन्तु वह स्वाभिमानी महिला थी इसलिए वह अपनी सुरक्षा स्वंय ही करती थी।

गोमती का पिरमा से पूर्व पहला विवाह चालसी पट्टी में हुआ था तब वह केवल बारह बरस की थी। वह मासूम बच्ची थी उससे विवाह क्या होता है, यह भी पता नहीं था। उसे केवल यह पता था विवाह में अच्छे कपड़े पहने जाते हैं। गोमती के पति के दूर के रिश्ते की भाभी के साथ तीन साल से नाजायज सम्बन्ध थे और वह उसके साथ रहती थी। गोमती के पति ने उसका बलात्कार किया। जिसमें उसकी जेठानी ने अपने देवर का पूरा साथ दिया। उसकी जेठानी ने उसका हाथ पकड़कर भीतर कमरे में छोड़ आयी और बाहर से कुण्डा लगा गयी। उसका पति ''उसका हाथ पकड़कर वह अन्धकार में ही उसे अपने बिछौने पर ले गया। पति–पत्नी के सम्बन्ध क्या होते हैं, उस अबोध को क्या पता ? वह चुपचाप गरम बिछौने में घुस गयी।''[3] उसे बहुत नींद आ रही थी परन्तु उसका पति उसके पूरे शरीर को टटोल रहा था। ज्यों ज्यों उसका पति पाशविक बल का प्रदर्शन करता रहा वह असह्य पीड़ा से चीखने लगी। तभी उसके पति ने उसे दूर झटक कर उसकी पीठ में एक मुक्का मारा था। और उसकी जेठानी ने देवर का साथ देते हुए उसे दुबारा बिस्तर पर घसीट दिया था। ''पति ने अपनी हथेली से उसका मुँह इतनी जोर से दबाया कि वह चीख भी न पा रही थी अब ! कुछ देर बाद पसीने से नहायी अचेत–सी एक ओर लुढ़क पड़ी–विवश भाव से। असह्य पीड़ा से वह कराह रही थी। सारा शरीर सूखे पत्ते की तरह काँप रहा था थर–थर ! जेठानी अब उसे खींचकर बाहर ले गयी और स्वंय भीतर घुसकर फटाक्–से किवाड़ बन्द कर दिये।''[4]

पहाड़ के गाँवो में आज भी कम उम्र में लड़कियों का विवाह कर दिया जाता है। उन्हें शिक्षा के उचित अवसर नहीं मिल

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 9 Sep. 2022, pp: 1161-1163 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

पाते है। बचपन से ही उन पर ऐसी बेड़िया डाल दी जाती है कि वे उनसे जीवन के अन्त तक भी बाहर नहीं निकल पाती है।

उसके ककिया ससुर का लड़का तेजराम भी उसकी सुन्दरता के वशीभूत होकर उसको अपनी करखैल बनाना चाहता था एक रात गोमती सोयी थी। तेजराम हाथ में हँसिया पकड़कर दूसरे हाथ से गोमती के बाल खींचता हुआ बोला, ''यहाँ रो किसके लिए रही है बदजात? चल, मेरे घर चल आज से मेरी रखैल बनकर रहेगी पिरमुँआ के मरने को इन्तजार अब मैं नहीं कर सकता।''[5] गोमती का पति सब कुछ देखता हुआ भी कुछ नहीं बोला बिस्तर पर बैठा रहा– अपना सिर घुटनों में गड़ाये। कुछ भी ना कर सका गोमती को बचाने के लिए, और तेजराम गोमती को घसीटता हुआ कमरे में ले गया। और लड़ने झगड़ने के बाद गोमती जब निढ़ाल अचेत–सी पड़ गयी तो तेजुवा ने उसके सारे वस्त्र चीर दिये। उसके मुँह में कपड़ा ठूँसकर, पाशविक प्रवृत्ति के प्रदर्शन पर उतर आया। ''भरकते चीड़ के छिलके के पीले उजियाले में वह भूखे हिस्र पशु की तरह उसकी नग्न–देह देखता रहा। तभी गोमती ने कराहते हुए करवट बदली, ज्यों ही पलकें खोली , तेजुवा का चेहरा सामने दीखा, उसके सारे शरीर में आग सी लग गयी। बिजलर की लहर सी कौंध गयी। प्रतिहिंसा की ज्वाला उसकी आँखों में धधकने लगी। जलता हुआ छिलका उसके मुँह पर दे मारा और दोनों हाथों के पंजे उसकी गरदन पर इतनी जोर से गड़ाये कि तेजुवा का शरीर धीरे–धीरे शिथिल पड़ने लगा और वह गो–गो–गो करता हुआ एक ओर ढुलक पड़ा।''[6] गोमती कुण्डी खोलकर झीनी चादर बदनपर लपेटे भागी तो उसके पीछे कलिया हँसिया लेकर भागा लेकिन गोमती जंगल बियाबान में गायब हो गई। गोमती हर बार स्वंय को बचाती हुई संघर्ष करती रहती है, वह परपुरूष के साथ सम्बन्ध नहीं बनाना चाहती। उसका अपने घर के पुरूषों द्वारा ही शारीरिक व मानसिक शोषण हो रहा था, जिसका वह आक्रमक रूप से प्रतिरोध करती है और अपने लज्जा को बचा लेती है।

समाज का हर पुरूष उसे अपनी वासना भरी निगाहों से देखता है और उसे पाने की लालसा करता है क्योंकि वह गरीब, लाचार व निम्न जाति की स्त्री है गाँव के पतरौल की दृष्टि भी उसके प्रति अच्छी ना थी। गोमती जब बाँज के पत्ते काटने पेड़ पर चढ़ती है तो पतरौल उसे देख रहा था '' लकड़बग्घे की सूरत वाला पतरौल तने से सटकर खड़ा हो जाता है और ऊपर झाँकने लगता है। एक–दो बार गोमती ने गुस्से से ऊपर से थूका तो खिः खिः हँसने लगा था– बेशरम !''[7] गोमती पतरौल से नहीं डरती बल्कि उसका डटकर सामना करते हुए उसके ऊपर थूक देती है। वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचार का बदला स्वंय लेने में सक्षम है। वह बार–बार अपनी अस्मिता को बचाने का प्रयास करती ळें

गोमती भाबर खटीमा में काम करने गई थी वहाँ उसने तिरपन सिंह लाला से कहा– मैं पूरे वर्ष तुम्हारे खेतों में काम करूँगी। उसके बदले वर्ष के अन्त में मुझे चार सौ रूपये चाहिए। लाला पहले ही उसके रूप पर मोहित था उसने कहा ठीक है तुम्हें रात मेरे साथ बितानी पड़ेगी। पहले गोमती उसके साथ रात बिताने से इन्कार करती है, परन्तु जब उसे याद आता है कि उसको खुशालराम के चार सौ रूपये देने के बाद ही वह अपने पुत्र से मिल सकती थी। तो वह पुत्र मोह के कारण विवश होकर उसकी बात मान लेती है। गोमती अपने जी को मारते हुए लाला के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने को मजबूर थी। '' हाथी के आने में शोरगुल मचाना आवश्यक होता था, पर लाला के आने में मुँह पर हथेली धरकर चुपचाप सिसकते रहना पड़ता था। कभी–कभी गोमती सोचती लाला के आने की अपेक्षा जंगली हाथी का आना शायद अधिक अच्छा रहता। एक ही बार में सारी यन्त्रणाओं से मुक्ति मिल जाती !''[8] कभी– कभी लाला अपने यार दोस्तों को भी लाता था। गोमती को विवश होकर उनके साथ भी सम्बन्ध बनाने पड़ते थे। गोमती सोचती यह एक वर्ष जल्दी निकल जाता, तो वह अपने पति और बेटे कुन्नू से मिल पाती। वह हर बार पुरूष की कामुक प्रवृत्ति का विरोध करती है पर इस बार वह पुत्र मोह के कारण इसका विरोध नहीं कर पाती है। गोमती का निम्न जाति में पैदा होना, उस पर आर्थिक स्थिति का जीर्ण–शीर्ण होना, अत्यधिक सुन्दर होना, पति का निर्बल होना, विपरीत परिस्थितियाँ ही गोमती के दुःखो का कारण थी। जिसके कारण उसका जीवन संघर्षों से घिरा हुआ रहा।समाज में स्त्रियों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता है फिर दलित स्त्री की दशा अधिक सोचनीय है उसे पूरे समाज के सामने लज्जा भंग होने की त्रासदी से गुजरना पड़ता है। डॉ. कुसुम मेघवाल द्वारा इस बात की पुष्टि भी होती है कि, ''इसे विड़म्बना ही कहा जाएगा कि एक ओर तथाकथित सवर्ण समाज की स्त्रियों में परपुरूष का ध्यान करना भी पाप और धर्म विरोधी समझा जाता है, वहीं दलित नारी को अपना सर्वस्व लुटा देने पर मजबूर किया जाता है। इस घृणित स्थिति को अपनी नियति मानने के पीछे दलित वर्ग की दयनीय आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक विवशताएँ ही रहीं। यथा कौन नारी अपनी इच्छा से अपनी इज्जत लुटाने को तैयार होती है''[9]

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो आज भी दलित स्त्री शोषण का शिकार हो रही है। उसके साथ भेदभाव, अपमान, बलात्कार, शोषण आदि की घटनाएँ आज भी देखने को मिलती है। दलित स्त्री आज भी गरीबी, सामाजिक विषमता, आर्थिक समस्याओं आदि से गुजर रही है। जिसके कारण वह आज भी दबी कुचली है। उसे पैसा कमाने के लिए लोगों के घर, स्कूल, होटल, दुकान से लेकर सड़को पर मजदूरी तक करनी पड़ती है। उन्हें परिवार के मर्दों के द्वारा भी शोषण, मार–पीट, शारीरिक शोषण व मानसिक प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता है, साथ ही कार्यक्षेत्र में अन्य सवर्ण पुरुषों द्वारा भी उनका शारीरिक और मानसिक शोषण किया जाता है। घरों में मालिक द्वारा कामगर महिलाओं के उत्पीड़न की घटनाएँ, मजदूर महिलाओं का शोषण, बलात्कार और अपमान की घटनाएँ आय दिन सामने आती है, पर प्रशासन द्वारा कई बार ऐसी घटनाओं को दबा दिया जाता है। और कई बार बदनामी के डर से दलित महिलाएँ अपने साथ हो रहे, बलात्कार, शोषण, छेड़छाड़ का जिक्र तक नहीं कर पाती है। एक तो उसे दलित होने पर प्रताड़ित किया जाता है दूसरा सुन्दर होना भी दलित स्त्री के लिए अभिशाप से कम नहीं है। उसे पुरुष के शोषण का शिकार पग–पग पर होना पड़ता है। स्त्री होने की पीड़ा तो वह सहती है, जाति का दंश भी सहना पड़ता है। लिंग के आधार पर दलित स्त्री हो चाहे सामान्य स्त्री, सबकी लड़ाई पुरुषवादी मानसिकता तथा वर्चस्व से है। लेकिन जब आर्थिक लड़ाई की बात होती है तब स्त्री–स्त्री में भी असमानता स्पष्ट रूप में दिखाई देती है। ''समाज ने दलित स्त्री को अपने पैर की जूती के समान इस तरह से दबाए रखा,कि वह अस्तित्व के प्रश्न से जूझना तो दूर, उसके सामने यह प्रश्न अस्तित्व नहीं रखता। एक सामान्य स्त्री की समस्याएँ जहाँ घर की चारदीवारी से बेडरूम से लेकर रसोई घर तक हैं, इसके अलावा पिता द्वारा सताई व पिता की अय्याशियों से तंग होने की कथा व्यथा है तो दूसरी तरफ घर व खेत–खलिहानों में अपनी इज्जत बचाने तथा घुट–घुट के जीने को अभिशप्त होने की कहानी है।''[10]

वर्तमान समय में दलित स्त्रियाँ अपने परिवार और समाज से लड़ती हुई आगे बढ़ रही है समाज में अब वह भी मुकाम हासिल कर रही है। पढ़–लिखकर सरकारी और गैरसरकारी विभागों में अपनी सेवाएँ दे रही है फिर भी कार्यक्षेत्र के भीतर या बाहर उनके साथ जातिवाद, शोषण, बलात्कार जैसी घटनाएँ होती है आज समाज को आवश्यकता है दलित स्त्री को जागरूक व सशक्त बनाने की। और कई महिलाएँ इस कार्य में आगे आ रही है इस संदर्भ में मोहनदास नैमिसराय ने भी दलित स्त्री के सम्बन्ध में लिखा है कि, ''दलित समाज जहाँ एक ओर अपने अस्तदर एक वर्ग के उदय से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहे हैं, वहीं उसे दलित आंदोलन के भीतर एक और आंदोलन की आहटें सुननी पड़ रही है। यह है दलित महिला का आंदोलन, जो समग्र महिला समुदाय के मुक्ति आंदोलन का हिस्सा होने के साथ–साथ दलित समाज में पितृसत्ता का प्रश्न उठाता है। दलित महिलाओं की त्रासदी यह है कि उन्हें एक गाल पर ब्राह्मणवाद का तो दूसरे गाल पर पितृसत्ता का थप्पड़ खाना पड़ता है।''[11]

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 9 Sep. 2022, pp: 1161-1163 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

दलित स्त्री को समाज में समान पायदान में लाने के लिए दलित पुरुषों को उनका सहयोग व समर्थन करना होगा। बिना पुरुषों के समर्थन के दलित स्त्री समाज की जटिल समस्याओं शोषण, अपमान, बलात्कार, अत्याचार आदि से बच नहीं सकती है साथ ही आवश्यकता है समाज में दलित स्त्री को स्वंय अपने वर्चस्व की लड़ाई लड़ने की। आज बहुत सी दलित स्त्रियाँ अपने और अपने समाज की स्त्रियों के लिए समाज के नियमों के विरूद्ध आवाज उठा रही है और दलित स्त्री के विकास का कार्य कर रही है और निश्चित ही उन्हें थोड़ी सफलता मिली है और आने वाले समय में दलित स्त्री अपने वर्चस्व की लड़ाई में निश्चित रूप से विजय प्राप्त करेगी।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. कर्दम डॉ० जयप्रकाश,दलित साहित्य वार्षिकी 2015, पृ० सं०–179
2. जोशी हिमांशु, कगार की आग,उपन्यासपृ० सं० –14
3. जोशी हिमांशु, कगार की आग,उपन्यास पृ० सं० –79
4. जोशी हिमांशु, कगार की आग,उपन्यास पृ० सं०–79,80
5.जोशी हिमांशु, कगार की आग,उपन्यास पृ० सं० – 51
6. जोशी हिमांशु, कगार की आग,उपन्यास पृ० सं० –52
7.जोशी हिमांशु, कगार की आग,उपन्यास पृ० सं० – 30
8.जोशी हिमांशु, कगार की आग,उपन्यास पृ० सं० –91
9.कर्दम डॉ० जयप्रकाश,दलित साहित्य वार्षिकी 2015, पृ० सं०–178
10. कर्दम डॉ० जयप्रकाश,दलित साहित्य वार्षिकी 2015, पृ० सं०–178
11.कर्दम डॉ० जयप्रकाश,दलित साहित्य वार्षिकी 2015, पृ० सं०–178